नारी - अपनी आवाज़ उठाओ।

जब है नारी में शक्ति सारी।
तो, क्यों कह रहे हो उसे बेचारी।
निकलो बाहर अपनी दिवारों को तोड़कर।
जलाओं भीतर की आग को हर सीमाओं को भूलकर।

तुमें चढ़नी है हर सीढ़ी।
तुमसे बढ़नी है हर पीढ़ी।
समाज देते है सिर्फ गालीयाँ।
पर तुमें लानी है उनके तालीयाँ।

न चाहते हुई भी बंध होना पड़ा जंजीरों में।
न चाहते हुई भी छुप रहना पड़ा सिन्दूर की लकीरो में।
सब जगह है यह पाबंदी।
तुम वह चिड़िया है जो चाहती है आज़ादी।
कौन खींच रहे है तुमें पीछे ?
कौन कर रहे है तुमें नीचे ?
आ जा मेरे प्यारे।
जो है सबसे दुलारे।

तुम भटकते रहे अपनी सपनों की तलाश में।
पर अटकते रहे खुशी की गुज़ारिश में।
लोग सिर्फ मारते तुम पर ताना।
कम है जो तुमें माना।

इस ज़िन्दगी में न मिला तुमें फूलों की बरसात।
तुम बढ़ते रही इन शस्तें काँटों के साथ।
तुमें देने है सम्मान।
पर कुछ लोग करते सिर्फ अपमान।

गिरने मत देना तुम्हारी आँसू की बारिश को।
भरने दो अपनी मन में हर ख्वाहिश को।
जब तुम्हारी ज़िन्दगी में अँधेरा होता है।
सोचो, रात के बाद ही सवेरा होता है।

तुमें नही झूकना है इन गलियों पर। पर
तुमें नही रुकना है मुश्किल पहेलियों पर
क्यों डरते हो आगे बढ़ने में ?
क्यों मरते हो हर जंग लड़ने में ?

उठाओ अपनी आवाज़ को।
बंद करो हर बक्वास को।
अपनी आशाओं को कभी बिकरने मत दो।
अपनी सपनों को कभी छुटने मत दो।

ढलने मत दो अपनी खुशीयों को।
मिलने दो अपनी आप को।
उन बुरी यादों से उलझने मत दो।
अपनी बातों से खुद को सुलझने दो।

तुम वह परिंदा नही।
जो उड़ना छोड़ देगें।
जो आगे बढ़ना छोड़ देगें।
एक उड़ान और भरो अपनी सपनों की ओर।